डॉ. उमेश प्रताप वत्स

झुंड

कैसे भ्रम पाल रहे हैं, शेर को मात दिलाने में
सारा जंगल एक हुआ है, उसे औकात बताने में।

बिल्ली भी सिंह गर्जना हेतु, करती है भरसक प्रयास
लक्कड़बग्घे, सियार, लोमड़ी, नोचने की करते आस

शातिर, धोखेबाज निकम्मे, सब एक हुए दिखाने में
सारा जंगल एक हुआ है, उसे औकात बताने में

भिन्न सोच-विचार थे फिर भी, बना झुंड सब हुये हैं एक
बांधे कौन गले में घंटी, एक-दूसरे को रहे हैं देख
फिर चली निकम्मी चालें, मंजिल पाने को बेताब
सिंह-शिकार करने की चाह, देख रहे कुर्सी का ख्वाब
सबसे बड़ा बेईमान कमीना, हदें की पार जताने में
सारा जंगल एक हुआ है, उसे औकात बताने में